कृषक ज्योति

कृषक ज्योति
Krishak Jyoti

भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका

संपादक - मंडल

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

मुख्य संपादक

ediotorinchief@krishakjyoti.in

प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सौम्या तिवारी

संपादक

editor@krishakjyoti.in

प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार

संपादक

editor@krishakjyoti.in

सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त

सह-संपादक

coeditor@krishakjyoti.in

टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

पंजीकृत कार्यालय - 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश -211002

Website - www.krishakjyoti.in

E-mail - editorinchief@krishakjyoti.in

Contact - 9450681433

e-ISSN No. 3108-1770

आम में लगने वाली प्रमुख बीमारियों का प्रबंधन

सागर तिवारी[1] ,डॉ राजेंद्र प्रसाद[2] ,आदर्श तिवारी[3] एवं बंदनीय पांडे[4]

कुलभाष्कर आश्रम पीजी कॉलेज प्रयागराज [1,2,4]

प्रो .राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय नैनी प्रयागराज [3]

परिचय

आम भारतवर्ष का राष्ट्रीय फल है स्वाद एवं गुण के आधार पर आम को फलो का राजा कहा जाता है आम का जन्म स्थान पूर्वी भारत वर्मा, लंका ,उत्तरी ऑस्ट्रेलिया फिलिपींस ,दक्षिणी चीन विश्व के अन्य गर्म तथा नम जलवायु वाले स्थान पर फैल गया अपने देश में आम के बाग लगभग 18 लाख एकड़ भूमि में है जिसमें आधा क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश में ही है शेष आधे भाग में बिहार ,बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र एवं अन्य राज्यों में अवस्थित है |

आम से विटामिन ए तथा सी अच्छी मात्रा में प्राप्त होते हैं इसमें शर्करा का प्रतिशत 11 से 20 तक होता है तथा थोड़ा मात्रा में फास्फोरस ,लोहा एवं कैल्शियम भी मिलता है ।

आम के पेड़ विभिन्न बीमारियों का शिकार हो सकते हैं और इन बीमारियों का सही प्रबंधन न करने पर उत्पादन और गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए इन बीमारियों के प्रभावी प्रबंधन के लिए उचित तकनीक को अपनाना जरूरी है। सही उपचार न होने पर यह उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

आम की प्रमुख बीमारियों और उनके प्रबंधन

(क) आम का खर्रा रोग या चूर्णी फफूंदी

यह आम का चूर्णी फफूंदी रोग पाउडर के रूप में दिखाई देता है और यह रोग के लगने से आम का उत्पादन 22 से 90% तक कम हो जाता है तथा यह रोग उत्तर प्रदेश में दिसंबर और मार्च के महीनों में दिखाई देता है और इस रोग का प्रकोप नई पत्तियां पर दोनों तरफ अनियमित भूरे धब्बे दिखाई देते हैं फूलों फलों और पत्तियों पर सफेद चूर्णी जैसी फफूंदी उत्पन्न हो जाती है बाद में फूल सूखकर गिर जाते है।

प्रबंधन

- रोग ग्रसित पत्तियों को तोड़कर अलग कर दें ।
- रोग रहित प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए जैसे कि नीलम ,जर्दालू जहांगीर और बेंगलुरु आदि ।
- केराटिन 0.1% या वेटेबल सल्फर 0.25% फूल आने के पहले छिड़काव करें और फल बनने के बाद 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

(ख) कालव्रण रोग (एंथराक्नोज़) –

यह आम का सामान्य रोग है तथा भारत में इस रोग के लगने से लगभग 2 से 40% तक उत्पादन कम हो जाता है और यह रोग फफूंद के कारण फैलता है तथा काल व्रण रोग का मुख्य लक्षण पत्तियों पर काले धब्बे पड़ जाते हैं और बाद में फिर काले धब्बे बड़े आकार में हो जाते हैं इस रोग के प्रकोप से कोमल पत्तियां शाखाएं तथा फूल फल भी सूख जाते हैं।

e-ISSN No. 3108-1770

प्रबन्धन

(1) आम के पौधे रोग रहित लगवाना चाहिए।

(2) आम के पेड़ से जो पत्तियां गिरती हैं उन्हें संग्रह करके मिट्टी के गड्ढे में दबा देना या फिर जला दें।

(3) कवक नाशी रसायन टॉप सेन कार्बेंडाजिम 0.1% का छिड़काव करें तथा इस रोग के नियंत्रण के लिए 5:5:50 का बोर्डेक्स मिश्रण का फल आने से 2 सप्ताह पहले छिड़काव करें।

प्रबन्धन –

इस रोग से फसल को बचाने का सर्वोत्तम उपाय है कि ईट के भट्टो की चिमनी आम के पूरे मौसम के दौरान लगभग 50 फीट ऊंची रखी जाए यह रोग के लक्षण दिखाई देते ही (लगभग अप्रैल) में बोरेक्स 1 प्रतिशत (1 किग्रा / 100 लीटर) पानी की दर से बने घोल का छिड़काव करें फलों की बढ़वार को विभिन्न अवस्थाओं के दौरान आम के पेड़ों पर 0.6 प्रतिशत बोरेक्स के दो छिड़काव फूल आने से पहले और तीसरा फूल आने के बाद छिड़काव करें जब फल मटर के दाने के बराबर हो जाए तो 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करना चाहिए।

(घ) डाई बैक रोग –

इस रोग में आम की टहनी ऊपर से नीचे की और सूखने लगती है और धीरे-धीरे पूरा पेड़ सूख जाता है यह फफूंद जनक रोग होता है जिससे तने की जलवाहिनी में भूरापन आ जाता है और वाहिनी सूख जाती है जल भी ऊपर नहीं चढ़ पाता।

प्रबन्धन

इसके रोकथाम के लिए रोग ग्रसित टहनियां के सूखे भाग को 25 सेमी नीचे से काट कर जला दें कटे स्थान पर बोर्डो पेस्ट लगाए और अक्टूबर माह में कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें साथ ही साथ ट्राइकोडर्मा युक्त गोबर की सड़ी हुई खाद चार से पांच किलो प्रति पेड़ डालें।

(ड़) झुमका रोग-

इस रोग में आम का आकार मटर के दाने जैसा रह जाता है इसका मुख्य कारण है पुष्पा अवस्था में कीटनाशक का छिड़काव जिसकी वजह से सत प्रतिशत पर परागण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई जिसके फल स्वरुप फ्रूट सेटिंग नहीं हुआ और आकार मटर के दाने के बराबर ही रह गया।

प्रबन्धन –

(ग) ब्लैक टिप या कोइली रोग –

यह रोग ईट के भट्टो के आसपास के खेतों में उसे निकालने वाली गैस सल्फर डाई ऑक्साइड के कारण होता है इस बीमारी में सबसे पहले फल का अगर भाग काला पड़ जाता है इसके बाद ऊपरी हिस्सा पीला पड़ जाता है तथा पश्चात गहरा भूरा और अंत में काला पड़ जाता है यह रोग दशहरी किस्म के आम में अधिक होता है।

(1) पुष्प अवस्था के समय किसी भी प्रकार के कीटनाशक व रोग नाशक का प्रयोग ना करें।

(2) कीट आकर्षक फैसले जैसे गेंदा गुलदाउदी पर सरसों आदि का अंतर फसल लगाई जिससे कि बाग में पर परागण करने वाला किट की संख्या बनी रहे।

(च) आम रेड रस्ट-

आम में लाल जंग पत्तियों और युवा टहिनियों को प्रभावित करता है जिससे प्रकाश संश्लेषण काम हो जाता है और पत्तियां झड़ जाती हैं या छोटे हर धब्बे के रूप में शुरू होता है जो लाल और जंग लगे होते हैं जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है अनियमित धब्बों में बदल जाता है पत्तियां पर नारंगी लाल दाने दिखाई देना जिससे पत्तियां झड़ जाती हैं और प्रकाश संश्लेषण क्षमता कम हो जाती है।

प्रबन्धन-

(1) - हेक्साकोनाजोल 5 एस. सी. कवकनशी का प्रयोग।

(2) - सल्फर 80% डीजी कवकनाशी का प्रयोग करें।